International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

Original Article

रामचरितमानस में नारी सशक्तिकरण: एक समकालीन दृष्टि

प्रियंका कुमारी

पूर्ववर्ती छात्रा, हिन्दी विभाग,

हर प्रसाद दास जैन महाविद्यालय, आरा

वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार

Manuscript ID:
IJAAR-130237

ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 2
November - December 2025
Pp. 257 – 264

Submitted: 11 Dec 2025
Revised: 28 Dec 2025
Accepted: 31 Dec 2025
Published: 5 Jan 2026

Corresponding Author:
प्रियंका कुमारी

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.22065947

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.22065947

सारांश:

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस भारतीय संस्कृति, धर्म और समाज का प्रतिनिधि ग्रंथ है। यह केवल धार्मिक आस्था और आध्यात्मिक चेतना का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ नहीं है, बल्कि भारतीय जीवन-मूल्यों, सामाजिक आदर्शों, पारिवारिक संबंधों तथा मानवीय संवेदनाओं का व्यापक एवं प्रभावशाली दस्तावेज भी है। इस महाकाव्य में नारी के विविध रूपों का अत्यंत मार्मिक एवं प्रभावशाली चित्रण हुआ है, जिनमें शक्ति, त्याग, धैर्य, आत्मसम्मान, बुद्धिमत्ता, कर्तव्यनिष्ठा तथा नेतृत्व क्षमता के अनेक आयाम दृष्टिगोचर होते हैं। तुलसीदास ने अपने समय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के मध्य नारी के ऐसे विविध चरित्रों को प्रस्तुत किया है, जो भारतीय समाज में स्त्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हैं।

रामचरितमानस की सीता केवल आदर्श पत्नी के रूप में ही नहीं, बल्कि साहस, आत्मबल, स्वाभिमान और संघर्षशील चेतना की प्रतिनिधि के रूप में सामने आती हैं। वनगमन के समय उनका दृढ़ निर्णय, वन के कठिन जीवन को स्वीकार करना तथा लंका में रावण के समक्ष अपने आत्मसम्मान और मर्यादा की रक्षा करना उनके व्यक्तित्व की आंतरिक शक्ति को प्रकट करता है। इसी प्रकार शबरी का चरित्र सामाजिक समता, भक्ति, आत्मीयता और नारी गरिमा का प्रतीक है। तारा और मंदोदरी जैसे पात्र नारी की बौद्धिक क्षमता, विवेक, दूरदर्शिता और राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। कौशल्या और सुमित्रा मातृशक्ति, त्याग, कर्तव्य तथा नैतिक नेतृत्व की प्रतिनिधि हैं, जबकि उर्मिला का चरित्र मौन त्याग, धैर्य और आंतरिक संघर्ष की विशिष्ट अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है।

नारी सशक्तिकरण की आधुनिक अवधारणा में समानता, स्वतंत्रता, शिक्षा, आत्मनिर्भरता, निर्णय क्षमता, सामाजिक सम्मान तथा अधिकार-बोध को विशेष महत्त्व दिया जाता है। यद्यपि रामचरितमानस की रचना आधुनिक नारीवादी विमर्श के समय नहीं हुई थी और उस समय की सामाजिक संरचना वर्तमान समय से भिन्न थी, फिर भी इसके नारी पात्रों में आत्मबल, आत्मसम्मान, विवेक, निर्णय क्षमता और नैतिक दृढ़ता जैसे ऐसे तत्व विद्यमान हैं, जिनके आधार पर आधुनिक स्त्री-विमर्श के संदर्भ में उनका पुनर्पाठ किया

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

जा सकता है।

प्रस्तुत शोध आलेख में रामचरितमानस में निहित नारी सशक्तिकरण के विविध पक्षों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि तुलसीदास के नारी पात्र अपने-अपने स्तर पर किस प्रकार स्त्री की गरिमा, शक्ति और सामाजिक भूमिका को प्रतिष्ठित करते हैं। इस अध्ययन में नारी को केवल पारिवारिक संबंधों के संदर्भ में देखने के स्थान पर उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व, नैतिक चेतना, निर्णय क्षमता और सामाजिक प्रभाव को भी केंद्र में रखा गया है। साथ ही, रामचरितमानस के नारी-चित्रण को उसके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है, ताकि मध्यकालीन नारी आदर्श और आधुनिक नारी सशक्तिकरण के बीच संबंधों एवं अंतरों को स्पष्ट किया जा सके।

मुख्य शब्द : रामचरितमानस, नारी सशक्तिकरण, सीता, शबरी, तुलसीदास, नारी चेतना, भारतीय संस्कृति, स्त्री विमर्श, नारी अस्मिता, आत्मसम्मान, स्त्री स्वाधीनता, महिला अधिकार।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:
प्रियंका कुमारी (2025). रामचरितमानस में नारी सशक्तिकरण: एक समकालीन दृष्टि. International Journal of Advance and Applied Research, 13(2), 257 – 264. https://doi.org/ 10.5281/zenodo.22065947

Creative Commons

OPEN ACCESS

प्रस्तावना:

भारतीय साहित्य में नारी को सृष्टि की आधारशिला तथा संस्कृति की संवाहक के रूप में स्वीकार किया गया है। भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपरा में नारी की भूमिका अत्यंत व्यापक और बहुआयामी रही है। वह केवल परिवार की संरक्षिका ही नहीं, बल्कि संस्कार, परंपरा, संस्कृति और मानवीय मूल्यों की वाहक भी रही है। भारतीय साहित्य की विभिन्न विधाओं में नारी के अनेक रूपों का चित्रण मिलता है, जिसमें कहीं वह शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित है, कहीं त्याग और ममता की प्रतिमूर्ति के रूप में, तो कहीं संघर्ष, साहस और आत्मसम्मान की प्रतीक के रूप में दिखाई देती है। इस व्यापक साहित्यिक परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित *रामचरितमानस* का विशिष्ट स्थान है।

रामचरितमानस हिंदी साहित्य की अमूल्य कृति होने के साथ-साथ भारतीय जनमानस के जीवन से गहरे रूप में जुड़ा हुआ महाकाव्य है। तुलसीदास ने रामकथा के माध्यम से तत्कालीन समाज के धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान की। उनके काव्य में पुरुष पात्रों के साथ-साथ नारी पात्रों का भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। सीता, कौशल्या, सुमित्रा, उर्मिला, शबरी, तारा और मंदोदरी आदि स्त्री पात्र कथा के विकास में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। इन पात्रों के

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

माध्यम से नारी के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को समझने का अवसर मिलता है।

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित *रामचरितमानस* न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का भी महत्वपूर्ण दस्तावेज है।[1] तुलसीदास का समय सामाजिक दृष्टि से परिवर्तन और संक्रमण का समय था। समाज में अनेक प्रकार की रूढ़ियाँ, परंपराएँ और असमानताएँ विद्यमान थीं। ऐसी परिस्थितियों में तुलसीदास ने अपने काव्य के माध्यम से धर्म, मर्यादा, कर्तव्य, प्रेम, त्याग और मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित किया। उनके नारी पात्रों को भी इसी व्यापक सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि के भीतर समझना आवश्यक है।

यद्यपि तुलसीदास का युग पुरुष प्रधान व्यवस्था का युग था, तथापि *रामचरितमानस* में नारी के अनेक ऐसे रूपों का चित्रण हुआ है जो उसकी स्वतंत्र चेतना, आत्मसम्मान, विवेक एवं शक्ति को उद्घाटित करते हैं। सीता के व्यक्तित्व में जिस प्रकार दृढ़ता, धैर्य और आत्मसम्मान दिखाई देता है, वह नारी के आंतरिक सामर्थ्य को स्पष्ट करता है। वे विपरीत परिस्थितियों में भी अपने व्यक्तित्व और मूल्यों से समझौता नहीं करतीं। रावण जैसे शक्तिशाली शासक के सामने भी उनका आत्मविश्वास और नैतिक दृढ़ता बनी रहती है। इस दृष्टि से सीता का चरित्र नारी अस्मिता और आत्मबल की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है।

इसी प्रकार शबरी का चरित्र सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शबरी एक साधारण वनवासी महिला होते हुए भी अपनी भक्ति, श्रद्धा और आत्मीयता के कारण रामकथा में विशिष्ट स्थान प्राप्त करती हैं। उनके माध्यम से तुलसीदास ने यह संदेश दिया कि व्यक्ति की महानता उसके सामाजिक स्तर, जन्म या बाहरी प्रतिष्ठा से निर्धारित नहीं होती, बल्कि उसके गुण, कर्म और भावनाओं से होती है। शबरी के प्रसंग में सामाजिक समरसता के साथ-साथ नारी की गरिमा का भी महत्वपूर्ण पक्ष सामने आता है।[1]

रामचरितमानस में तारा और मंदोदरी जैसे पात्र नारी की बौद्धिक क्षमता और राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। तारा परिस्थितियों का विवेकपूर्ण मूल्यांकन करके बाली को उचित सलाह देती हैं। इसी प्रकार मंदोदरी रावण को उसके अहंकार और गलत निर्णयों के संभावित परिणामों से सावधान करती हैं। वे अपने पति की प्रत्येक बात का समर्थन करने के स्थान पर सत्य और नीति के आधार पर अपना मत व्यक्त करती हैं। इस प्रकार उनके चरित्र में नारी के स्वतंत्र विवेक और नैतिक साहस का परिचय मिलता है।

कौशल्या और सुमित्रा के चरित्र में मातृशक्ति का अत्यंत प्रभावशाली रूप दिखाई देता है। कौशल्या अपने पुत्र राम के प्रति गहरी ममता रखने के बावजूद धर्म और मर्यादा के महत्त्व को समझती हैं। सुमित्रा अपने पुत्र लक्ष्मण को राम की सेवा और कर्तव्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

करती हैं। इन दोनों पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि नारी केवल परिवार की भावनात्मक संरचना का आधार नहीं है, बल्कि वह परिवार के नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को दिशा देने वाली शक्ति भी है।

उर्मिला का चरित्र भी नारी सशक्तिकरण की दृष्टि से विचारणीय है। लक्ष्मण के वनगमन के बाद उर्मिला अयोध्या में रहकर एक प्रकार के मौन संघर्ष का जीवन जीती हैं। उनका त्याग प्रत्यक्ष रूप से उतना दिखाई नहीं देता जितना सीता का वनगमन, किंतु उनके जीवन में धैर्य, संयम और मानसिक दृढ़ता का महत्वपूर्ण स्थान है। उर्मिला का चरित्र यह संकेत करता है कि नारी का संघर्ष केवल बाहरी परिस्थितियों से नहीं होता, बल्कि उसके भीतर चलने वाला भावनात्मक और मानसिक संघर्ष भी उसकी शक्ति का प्रमाण हो सकता है।

नारी सशक्तिकरण की दृष्टि से *रामचरितमानस* का अध्ययन इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसमें नारी के केवल एक ही रूप को प्रस्तुत नहीं किया गया है। यहाँ नारी पत्नी भी है, माता भी है, भक्त भी है, नीति-परामर्शदाता भी है और संघर्षशील व्यक्तित्व भी। इस बहुआयामी स्वरूप के कारण *रामचरितमानस* के नारी पात्रों को आधुनिक स्त्री-विमर्श के संदर्भ में नए ढंग से समझने की पर्याप्त संभावना है।

आधुनिक समय में नारी सशक्तिकरण का प्रश्न केवल महिलाओं को अधिकार देने तक सीमित नहीं है। आज नारी की शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक प्रतिष्ठा, राजनीतिक भागीदारी, निर्णय लेने की स्वतंत्रता, सुरक्षा, सम्मान और समान अवसर जैसे प्रश्न भी महत्वपूर्ण हैं। इन आधुनिक प्रश्नों की पृष्ठभूमि में *रामचरितमानस* के नारी पात्रों का पुनर्पाठ हमें यह समझने में सहायता करता है कि भारतीय साहित्यिक परंपरा में नारी की शक्ति और गरिमा के कौन-कौन से रूप पहले से मौजूद रहे हैं।

हालाँकि यह भी आवश्यक है कि *रामचरितमानस* में नारी के चित्रण को आधुनिक नारीवाद के समान मान लेना उचित नहीं होगा। मध्यकालीन समाज की संरचना, पारिवारिक व्यवस्था, धार्मिक मान्यताएँ और सामाजिक परिस्थितियाँ आधुनिक युग से भिन्न थीं। इसलिए तुलसीदास के नारी पात्रों का मूल्यांकन उनके युगीन संदर्भों के साथ किया जाना चाहिए। इस प्रकार का संतुलित अध्ययन न तो उन्हें केवल आधुनिक नारीवादी आदर्शों में सीमित करेगा और न ही उनके व्यक्तित्व में निहित शक्ति एवं चेतना की उपेक्षा करेगा।

वास्तव में *रामचरितमानस* में नारी सशक्तिकरण को समझने के लिए नारी के बाहरी अधिकारों के साथ-साथ उसकी आंतरिक शक्ति को भी केंद्र में रखना आवश्यक है। आत्मसम्मान, धैर्य, विवेक, कर्तव्यबोध, निर्णय क्षमता, नैतिक दृढ़ता और संघर्षशीलता नारी के सशक्त व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण आधार हैं। इन सभी पक्षों की अभिव्यक्ति तुलसीदास के विभिन्न नारी पात्रों में अलग-अलग रूपों में दिखाई देती है।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

अतः *रामचरितमानस* में व्याप्त नारी सशक्तिकरण का अध्ययन केवल साहित्यिक पात्रों के चरित्र-चित्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज में नारी की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और नैतिक भूमिका को समझने का भी एक माध्यम है। तुलसीदास के नारी पात्र आज के पाठक को यह विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं कि नारी की वास्तविक शक्ति उसके आत्मसम्मान, विवेक, साहस और मानवीय गरिमा में निहित है। इसी व्यापक दृष्टिकोण से *रामचरितमानस* में व्याप्त नारी सशक्तिकरण का अध्ययन समकालीन संदर्भ में भी प्रासंगिक और उपयोगी सिद्ध होता है।

नारी सशक्तिकरण की अवधारणा:

नारी सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर समान अवसर और सम्मान प्रदान करना है। यह केवल अधिकारों की प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मनिर्णय, आत्मविश्वास, शिक्षा, नेतृत्व और सामाजिक सहभागिता से भी संबंधित है। आधुनिक युग में नारी सशक्तिकरण को मानवाधिकार, समानता और सामाजिक न्याय के दृष्टिकोण से देखा जाता है। यद्यपि *रामचरितमानस* की रचना मध्यकाल में हुई, फिर भी उसमें वर्णित अनेक नारी पात्र ऐसे गुणों से संपन्न हैं जो आज के नारी सशक्तिकरण की अवधारणा को सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं। तुलसीदास ने नारी को केवल पारिवारिक दायित्वों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज, धर्म और नीति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

सीता : नारी अस्मिता और आत्मबल का प्रतीक: *रामचरितमानस* में सीता का चरित्र नारी सशक्तिकरण का सर्वोच्च उदाहरण है। वे केवल आदर्श पत्नी नहीं हैं, बल्कि दृढ़ इच्छाशक्ति, आत्मसम्मान, साहस और नैतिक शक्ति की प्रतिमूर्ति भी हैं। वनगमन के समय उनका राम के साथ जाने का निर्णय उनकी स्वतंत्र सोच और अधिकार-बोध को व्यक्त करता है। वे स्पष्ट रूप से अपने जीवन के संबंध में स्वयं निर्णय लेने की क्षमता रखती हैं। अशोक वाटिका में रावण के समक्ष उनका अडिग रहना नारी की नैतिक शक्ति और आत्मगौरव का परिचायक है।[1]

सीता किसी भी प्रकार के प्रलोभन अथवा भय के सामने झुकती नहीं हैं। वे सत्य, धर्म और मर्यादा के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखती हैं। उनका चरित्र यह सिद्ध करता है कि नारी परिस्थितियों की दासी नहीं, बल्कि अपने आदर्शों की रक्षक और संघर्षशील व्यक्तित्व की धनी होती है। सीता के माध्यम से तुलसीदास ने यह संदेश दिया है कि आत्मसम्मान और नैतिक दृढ़ता ही स्त्री की वास्तविक शक्ति है।

शबरी : सामाजिक समानता और स्त्री चेतना: शबरी का चरित्र सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे वनवासी और निम्नवर्गीय महिला होते हुए भी अपनी भक्ति, समर्पण और निष्कलुष प्रेम के कारण भगवान राम का स्नेह प्राप्त करती हैं। तुलसीदास ने शबरी के माध्यम से यह संदेश दिया है कि किसी भी

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

स्त्री की महानता उसके सामाजिक स्तर, जाति अथवा आर्थिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसके गुणों और कर्मों से निर्धारित होती है।[2]

शबरी का जीवन सामाजिक समरसता और मानव समानता का आदर्श प्रस्तुत करता है। वे समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसे प्रायः उपेक्षित माना जाता था, किंतु उनकी आध्यात्मिक चेतना और आस्था उन्हें विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। इस प्रकार शबरी का चरित्र स्त्री सशक्तिकरण के साथ-साथ सामाजिक न्याय और समावेशिता का भी संदेश देता है।

तारा और मंदोदरी : राजनीतिक चेतना की प्रतिनिधि: तारा और मंदोदरी *रामचरितमानस* की ऐसी स्त्रियाँ हैं जो अपनी बुद्धिमत्ता, विवेक और दूरदर्शिता के लिए जानी जाती हैं। तारा बाली को तथा मंदोदरी रावण को उचित परामर्श देती हैं। वे परिस्थितियों का सूक्ष्म विश्लेषण करने और उचित निर्णय सुझाने की क्षमता रखती हैं। इन दोनों पात्रों के माध्यम से तुलसीदास ने यह स्पष्ट किया है कि स्त्रियाँ केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे शासन, नीति और निर्णय प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता रखती हैं।[3]

तारा की राजनीतिक समझ और मंदोदरी की नैतिक दृष्टि यह दर्शाती है कि स्त्रियाँ समाज और राज्य के हित में सार्थक सुझाव देने में सक्षम हैं। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व क्षमता जिस प्रकार महत्वपूर्ण मानी जाती है, उसका प्रारंभिक स्वरूप इन पात्रों में देखा जा सकता है।

कौशल्या, सुमित्रा और उर्मिला : त्याग एवं कर्तव्यनिष्ठा का स्वरूप: कौशल्या और सुमित्रा मातृत्व के आदर्श स्वरूप को प्रस्तुत करती हैं। वे अपने पुत्रों को धर्म, कर्तव्य और मर्यादा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं। कौशल्या का धैर्य और सुमित्रा की उच्च नैतिक दृष्टि भारतीय नारी के आदर्श गुणों को उजागर करती है।[4]

उर्मिला का त्याग भी नारी शक्ति का अनूठा उदाहरण है। लक्ष्मण के चौदह वर्ष के वनवास के दौरान उनका धैर्य, संयम और कर्तव्यपरायणता नारी के आंतरिक सामर्थ्य को प्रकट करती है। यद्यपि उन्हें अपेक्षाकृत कम महत्व दिया जाता है, फिर भी उनका त्याग और सहनशीलता अत्यंत प्रेरणादायक है। उर्मिला यह सिद्ध करती हैं कि त्याग और धैर्य भी शक्ति के महत्वपूर्ण रूप हैं।

कैकेयी : निर्णय क्षमता और व्यक्तित्व की जटिलता: *रामचरितमानस* में कैकेयी का चरित्र भी नारी सशक्तिकरण के संदर्भ में विचारणीय है। यद्यपि उनके निर्णय के कारण राम को वनवास जाना पड़ता है, फिर भी यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि वे अपने अधिकारों और वरदानों के प्रति सजग हैं। वे राजदरबार में अपनी बात रखने का साहस रखती हैं तथा निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करने की क्षमता भी रखती हैं।[5]

कैकेयी का चरित्र यह दर्शाता है कि स्त्रियाँ केवल भावनात्मक नहीं होतीं, बल्कि वे राजनीतिक

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

और सामाजिक परिस्थितियों को प्रभावित करने की शक्ति भी रखती हैं। उनके चरित्र की जटिलता स्त्री व्यक्तित्व के बहुआयामी स्वरूप को उजागर करती है।

रामचरितमानस और समकालीन स्त्री विमर्श:

वर्तमान समय में स्त्री विमर्श समानता, अधिकार, स्वायत्तता, नेतृत्व और गरिमा की चर्चा करता है। *रामचरितमानस* के नारी पात्र इन मूल्यों की पुष्टि करते हैं। सीता का आत्मसम्मान, शबरी की सामाजिक स्वीकृति, तारा और मंदोदरी की बौद्धिक क्षमता, कैकेयी की निर्णय क्षमता तथा कौशल्या-सुमित्रा का नैतिक नेतृत्व आधुनिक नारी सशक्तिकरण के आधारभूत तत्वों से मेल खाता है।

यद्यपि यह ग्रंथ मध्यकालीन सामाजिक परिवेश में रचा गया था, फिर भी इसके नारी पात्र आज भी प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं। ये पात्र यह संदेश देते हैं कि स्त्री केवल परिवार की आधारशिला ही नहीं, बल्कि समाज, संस्कृति और राष्ट्र निर्माण की भी महत्वपूर्ण शक्ति है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः *रामचरितमानस* में नारी केवल करुणा, प्रेम और त्याग की प्रतिमा नहीं है, बल्कि शक्ति, विवेक, आत्मसम्मान, धैर्य, कर्तव्यनिष्ठा तथा नेतृत्व की प्रतीक भी है। तुलसीदास ने अपने विविध नारी पात्रों के माध्यम से स्त्री के बहुआयामी व्यक्तित्व को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। सीता के चरित्र में आत्मबल, मर्यादा और संघर्षशीलता; शबरी में भक्ति, समानता और सामाजिक चेतना; तारा एवं मंदोदरी में बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता और राजनीतिक समझ; तथा कौशल्या, सुमित्रा और उर्मिला में त्याग, धैर्य और नैतिक आदर्शों का उत्कृष्ट समन्वय दिखाई देता है।

इन पात्रों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि नारी केवल परिवार की संरक्षिका नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति की संवाहिका भी है। *रामचरितमानस* में स्त्रियाँ अनेक महत्वपूर्ण परिस्थितियों में मार्गदर्शक, सलाहकार और प्रेरक की भूमिका निभाती हैं। वे अपने आचरण, विचार और निर्णयों द्वारा यह सिद्ध करती हैं कि समाज के निर्माण और संरक्षण में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। तुलसीदास ने नारी को सम्मान, मर्यादा और नैतिक शक्ति के साथ चित्रित कर उसकी सामाजिक गरिमा को प्रतिष्ठित किया है।

समकालीन स्त्री विमर्श के संदर्भ में भी *रामचरितमानस* के नारी पात्र अत्यंत प्रासंगिक हैं। आत्मसम्मान, समानता, स्वायत्तता, सामाजिक सहभागिता और नेतृत्व जैसे आधुनिक नारी सशक्तिकरण के मूल तत्व इन पात्रों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। यद्यपि यह ग्रंथ मध्यकालीन सामाजिक परिवेश में रचा गया था, फिर भी इसमें निहित नारी संबंधी मूल्य आज के समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि *रामचरितमानस* भारतीय समाज में नारी सशक्तिकरण

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

की अवधारणा को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह ग्रंथ नारी के आदर्श स्वरूप, उसकी आंतरिक शक्ति, नैतिक दृढ़ता और सामाजिक योगदान को रेखांकित करता है। इसी कारण *रामचरितमानस* के नारी पात्र आज भी प्रेरणा, सम्मान और सशक्तिकरण के प्रतीक बने हुए हैं तथा भारतीय सांस्कृतिक चेतना में अपनी विशिष्ट प्रासंगिकता बनाए हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. तुलसीदास. रामचरितमानस. गीता प्रेस, गोरखपुर, नवीन संस्करण, 2023.
2. शुक्ल, रामचन्द्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2020, पृ. 145–152.
3. नगेंद्र, डॉ. भारतीय साहित्य और नारी विमर्श. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. 85–102.
4. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. हिन्दी साहित्य की भूमिका. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृ. 110–125.
5. शर्मा, रामविलास. भारतीय संस्कृति और हिन्दी साहित्य. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृ. 75–90.